सत्य साहित्य

वर्ष 9/ अंक 4
जुलाई 2026
Year 9/ No. 4
July 2026

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे,
भक्ति बदलिया उमड़ झूमती,
झड़िया सरस लगा दे ॥१॥
घट में घटा घन नाम गर्ज से,
मन मयूर नचा दे ॥२॥
परम धाम की कृपा पवन का,
पानी पर बहा दे ॥३॥
पाप ताप से तप्त हृदय मन,
शीतल शान्त बना दे ॥४॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- गुरु पूर्णिमा की बधाई
- Control of the Senses
- साधना में बाधा– अहंकार
- साधना में बाधाएँ
- श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण – बटाला
- आप बीती
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

गुरु पूर्णिमा की बधाई

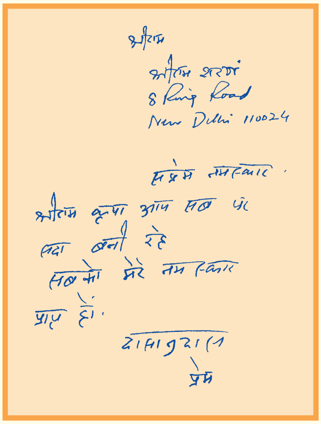
श्रीराम
श्रीराम शरणं
8 Ring Road
New Delhi 110024

सप्रेम नमस्कार।
श्रीराम कृपा आप सब पर
सदा बनी रहे
सबको मेरे नमस्कार
प्राप्त हों।
दासानुदास
प्रेम

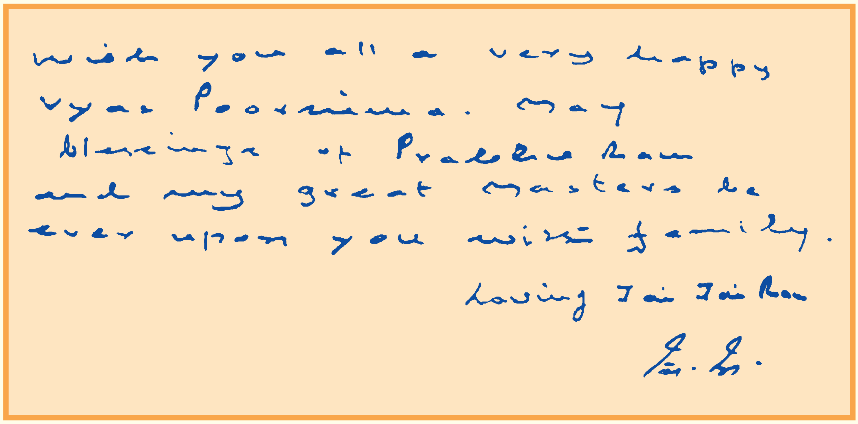
Wish you all a very happy Vyas Poornima. May blessings of Prabhu Ram and my great Masters be ever upon you with family.

Loving Jai Jai Ram

Indriya-Sanyam (Control of the Senses)

सत्यानन्द

Remember the Supreme Being Narayan Omkar who is the ruler of the entire universe and the foundation and support of all. (1) (Narayan A name of the Supreme Lord, the refuge and sustainer of all beings.Omkar The primordial sacred sound Om, symbolizing the Supreme Reality, the source and sustaining principle of all creation.)

The five senses are the instruments of knowledge, and their proper regulation is prescribed. Always keep them under restraint, maintaining complete attentiveness and awareness. (2) First, thoroughly reform the faculty of hearing and bring the ears under control. Refrain from listening to the ill repute or disgrace of others, as well as slander, backbiting, and tale-bearing. (3) Noble and saintly persons do not listen to their own praise. The wise, ascetics, charitable souls, the brave, the steadfast, and the intelligent all avoid hearing their own glorification. (4) Listen to spiritual discourses and devotional singing with love, even if you must travel for miles to do so. One should hasten from afar to be in the company of saints and noble persons. (5) Attend the company of the wise and listen to spiritual wisdom with full attention. Carefully contemplate the teachings of Karma Yoga, true devotion, and righteousness, and adopt them in your life. (6) Listen to melodious sacred

hymns and songs that glorify Hari. Always listen with a receptive heart to the sublime greatness and sweetness of the Divine Name. (7) Holy company is itself the Ganga, flowing with unending waves of spiritual wisdom. Devotion is like the Bhagirathi, purifying every part of one's being.(8)

Recognize as true saints those noble, simple, and guileless people who are absorbed in remembrance of God and the study or recitation of sacred texts. They are genuine servants of God and sincere devotees. (17) The company of such people purifies the faculty of hearing. Through the gift of devotion and God-remembrance, they fill the mind with true understanding and spiritual wisdom. (18) By listening to sacred scriptures, the ears attain purity. Devotional songs, spiritual discourses, and narrations of the glory of Hari make the faculty of hearing pure and holy. (19) Make proper use of the eyes by reading sacred texts with a focused mind. Cultivate reverence and devotion by obtaining the blessed sight of saints and noble souls. (20) Revere parents, teachers, and noble souls with your eyes. With loving devotion, behold their sacred presence and understand the deeper meaning of their words. (21) Do not allow hatred, fault-finding, or anger to enter your eyes. Abandon impure feelings, deceit, and hostility, and thereby attain happiness and contentment. (22) Upon seeing the poor and suffering, cultivate feelings of compassion. Through service and acts of benevolence, create the means for true happiness. (23) Virtuous people, after due deliberation, declare that the true purpose and discipline of the eyes is to renounce sinful glances and eliminate the defects of one's vision.(24) Use the hands to perform noble deeds, acts of charity, and benevolent works. Through service, protection, and care, help uplift the poor and the downtrodden. (25)

Turn the rosary slowly with your hands, chanting “Ram.” While doing so, practice meditation and concentration, bringing the restless movements of the mind under control. (26) The hand is a powerful instrument for protecting and rescuing others. Filled with compassion, use it to support, sustain, and care for those who are suffering. (27) Many brave and heroic people attained greatness through the strength of their arms. By serving humanity, they uplifted countless people. (28) Sit with steady feet in the company of devotees and in the court of Hari. Seated in a proper posture, worship and meditate upon the Divine Name, the essence of all existence. (29) Walk with eagerness to places where noble and virtuous people gather. Go wherever spiritual discourses, devotional singing, and God-remembrance are imbued with the love and spirit of Ram. (30) Walk to wherever the work of selfless service and deeds of compassion towards the poor and afflicted are to be performed. Go and serve them, preserving their honour and dignity. (31) Brave people hasten to serve their community and country. They willingly sacrifice even their own bodies to alleviate the suffering and pain of others. (32)

By cultivating and practicing such disciplines, make the body a perfected instrument. Engage in the repetition of the Divine Name and become calm, steadfast, and deeply composed. (33)

(Swami Satyanand, Shree Bhakti Prakash, pp. 159-162) ■

साधना में बाधा - अहंकार

प्रेम

साधना करने वाले के रास्ते में कई रुकावटें आया करती हैं। इसमें अंहकार विशेष है। थोड़ी सी कमाई करके परमेश्वर की कृपा हो जाती है तो अहं आ जाता है कि मुझ में शक्ति आ गई है। कोई मेरे मन की बात, न करे तो क्रोध भी आ जाता है। इसने मेरी बदनामी क्यों करी?

अतः साधना के रास्ते में बड़ा भारी विघ्न है। सहन करें व यत्न करें कि अपने आप को परमेश्वर के हवाले कर दें। यह जो कृपा दी होती है, जब चाहे वह वापिस भी ली जा सकती है। कुछ लोग अपने आप को बड़ा मानते हैं और दूसरों को तुच्छ समझते हैं।

एक बार महाराष्ट्र में अकाल पड़ा तो शिवाजी ने किला बनवाना शुरु कर दिया। यह सोचकर कि कई लोगों को नौकरी मिल जाएगी। श्री समर्थ गुरु रामदास जी उधर से गुज़रे तो शिवाजी ने आगे जा कर यह बात उनको कही तो श्री समर्थ रामदास जी ने उसे मिट्टी उठाने को कहा। मिट्टी से मेंढक का बच्चा निकला तो उन्होंने पूछा,"इसको रोटी कौन देता है?" करने वाला कोई और ही है। यह धारणा धारनी चाहिए कि करने वाला दाता होता है। करने वाला परमेश्वर ही है। यदि उसकी करनी न होती तो हम श्री महाराज जी के सम्पर्क में न आते। श्री महाराज जी ने सारी उम्र सेवा करी। अपने आप को बड़ा नहीं कहलवाया, अपनी पूजा नहीं करवाई, यह बड़ी बात है। जो बड़ा सेवक है, जो अपने आप को बड़ा समझते हैं वह राम ही जानते हैं कि कितना बड़ा है।

यहाँ पर जो भी कोई आए हैं वे जितना समय सेवा में लगा सकें लगाएँ तथा अहं न आने दें। परमेश्वर श्री राम तेरी कृपा सब पर हो। तेरी कृपा सब पर हो। परमार्थ का जीवन तेरी कृपा से ही मिलता है। तू ही कृपा कर।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुख वाक्य, 25.7.69, परम पूजनीय श्री महाराज जी की डॉयरी से) ■

साधना में बाधाएँ

रोम रोम श्री राम पुकारे, ऐसी कृपा करो मेरे राम!

विश्वामित्र

इन्द्रिय-संयम देता है - अद्भुत प्रसन्नता।
मन की चंचलता से घबराने की आवश्यकता
नहीं। बिजली, वायु की शक्ति की तरह उसके
उपयोग की बात सोचें - अतः मन की
उत्तेजित वृत्तियों पर नियन्त्रण अंकुश लगाने
की आवश्यकता - फिर उसी मन से अनेकों
उपयोगी कार्य किये जा सकते हैं।
सधा हुआ मन उसी प्रकार आत्मा के इशारों पर
नाचता है जैसे रिंग मास्टर के इशारे पर
शेर, हाथी और मदारी के इशारे पर
रीछ-बन्दर। जाप चंचल मन पर अंकुश।

Control over the senses gives extraordinary joy. There is no need to be disturbed by the restlessness of the mind. Rather, just like the power of electricity and wind, think of how its power can be harnessed and utilized. Therefore, it is necessary to control and restrain the agitated tendencies of the mind—then, that very same mind can be used to perform numerous useful tasks. A well-trained mind dances to the soul's command—just as lions and elephants obey the signals of a ringmaster, and bears and monkeys follow the cues of a street performer. Jaap is the means of bringing the restless mind under control.

बाह्य परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो, चाहे गर्मी हो, बरसात हो, पंछी चह चहा रहे हों, कुछ भी हो रहा हो, मेरा मन परमात्मा की भक्ति में रत रहे। हर हालत में, हर परिस्थिति में और हर वक्त मेरा मन परमात्मा की भक्ति में लगा रहे। मैं राम नाम का सिमरन करता रहूँ यह स्वामी जी महाराज की कितनी ऊँची कामना है, कितनी दिव्य कामना है। ऐसी ही कामनाएँ हम साधकों की होनी चाहिए। तुच्छ कामनाओं का संबंध lower mind के साथ है, उच्च कामनाओं का सम्बंध higher mind के साथ है। तुच्छ कामनाएँ जिन्हें भौतिक कामनाएँ भी कहा जाता है का त्याग करके उद्दात कामनाओं का सहारा लेना चाहिए। साधक को जो उज्जवल भक्ति की कामनाएँ हैं उनका सहारा लेना चाहिए। कामनाओं को मारने का और कोई साधन नहीं है। संत महात्मा फरमाते हैं कि इन्हें मारना नहीं इनका दिव्यीकरण कर दीजिएगा। Divinisation कर दीजिएगा, इनको divinise कर दीजिएगा। इनका ऊर्ध्वीकरण हो जाए तो ये उच्च हो जाएँ, उद्दात हो जाएँ, साधक को ऐसा सहारा लेना चाहिए।

ये जितने भी विकार हैं इनका हमारी कामनाओं से गहरा संबंध है। ये विकार हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मत्सर इत्यादि। इन्हीं से विभिन्न कामनाएँ उपजती हैं। इनको मारना कोई संभव बात तो नहीं दिखाई देती, शायद मारने की ज़रूरत भी नहीं है। जो चीज़ सार्वभौमिक होती है वह परमात्मा की निर्मित हुआ करती हैं जैसे पाँच इंद्रियाँ या दस इन्द्रियाँ कहिए कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ। आप संसार के किसी भी कोने में चले जाओ हर एक के अन्दर दस इन्द्रियाँ ही हैं। यह सार्वभौमिक phenomenon है। यह परमात्मा की देन है किसी व्यक्ति की देन नहीं। इसी प्रकार संसार के किसी कोने में भी आप चले जाओ आप को काम, क्रोध, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष यह सब चीज़ें आपको मिलेंगी। तो इसका अभिप्राय यही दिखाई देता है कि ये भी individual तो नहीं हैं, व्यक्तिगत तो नहीं हैं, यह भी सार्वभौमिक ही हैं। इनकी रचना भी परमात्मा के द्वारा ही हुई है। ग़लती तो हमसे हो रही है कि हम इनका सदुपयोग न करके तो इनका दुरुपयोग कर रहे हैं। आप सबने मिल कर रावण, कुंभकरण एवं मेघनाद को जला दिया है। इनमें से कोई काम का प्रतीक है, कोई मोह का प्रतीक है, कोई अहंकार का प्रतीक है तो किसी में ये सब चीज़ें इकट्ठी पाई जाती हैं। जिनमें ये सब चीज़ें इकट्ठी हैं उसे रावण कहा जाता है। आपने मार दिया है, बड़े पटाखे बजे हैं मानो मर गया है तो क्या ये वाकई मर गया है? अगले बरस फिर आप जलाओगे तो फिर मरा कहाँ? मानो ऐसा ही लगता है कि ये विकार मारने पर भी, जलाने पर भी न जलते हैं और न मरते हैं बल्कि बने ही रहते हैं। कहीं न कहीं कुछ न कुछ इनका अंश रह ही जाता है जो फिर अंकुरित होता है और अगले वर्ष तक फिर full fledged हो जाते हैं। काम–क्रोध सबके सब अपने पूर्ण रूप धारण किए हुए बिल्कुल तैयार होते हैं, जलने के लिए फिर तैयार हैं। आप अगले साल उनको फिर जलाओगे। न जाने यह परम्परा कब से चली आ रही है और यह सिलसिला चलता ही रहेगा।

स्वामी राम कृष्ण परमहंस से किसी ने पूछ लिया, ''ठाकुर! ये मोह, ममता, अहंकार, मद इत्यादि किसी के भागते भी हैं क्या? क्या किसी के खत्म होते हैं? यदि इनको भगाना है तो किस तरीके से भगाया जाए?'' ठाकुर बहुत सुंदर उत्तर देते हैं। कहते हैं,'' क्या आवश्यकता है इन्हें भगाने की? क्यूँ भगाना चाहते हो? मैं तो इतना ही समझता हूँ कि सिर्फ इनकी दिशा बदलने की ज़रूरत है। इनकी दिशा बदल दो तो इनको भगाने की या इनको मारने की ज़रूरत नहीं। काम मर गया तो संसार में वृद्धि नहीं हो सकेगी।

कैसे मरे, क्यूँ मारना है इसे? इसे परमात्मा के साथ क्यूँ नहीं जोड़ देते? इसे दिव्य क्यूँ नहीं बना देते?'' यह ठाकुर की सलाह है।

तुच्छ कामनाओं का संबंध lower mind के साथ है, उच्च कामनाओं का सम्बंध higher mind के साथ है। तुच्छ कामनाएँ त्यागनी चाहिएँ, जिन्हें भौतिक कामनाएँ कहा जाता है उनका त्याग करके, उद्दात कामनाओं का सहारा लेना चाहिए, जो उज्जवल भक्ति की कामनाएँ हैं, साधक को उनका सहारा लेना चाहिए। कामनाओं को मारने का और कोई साधन नहीं है। संत महात्मा फरमाते हैं, इन्हें मारना नहीं इनका दिव्यीकरण कर दीजिएगा। Divinisation कर दीजिएगा, इनको divinise कर दीजिएगा।

देवर्षि नारद ने भी अपने जीवन में ऐसा ही करके दिखाया है। उन्हें सौंदर्य की ज़रूरत पड़ती है तो भगवान् के पास जाते हैं और कहते हैं कि मुझे अपना सौंदर्य दे दीजिएगा। ऐसी कामना है तो भौतिक लेकिन भगवान् से जुड़ के दिव्य हो गई है। जब आप कामना की पूर्ति किसी व्यक्ति से करते हो तो वह अदिव्य रहती है। प्रायः हम कामनाओं की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति के पास जाते हैं। व्यक्ति को धन चाहिए तो वह धनवान के पास जाता है परमात्मा के पास तो नहीं जाता। देवर्षि नारद विश्वमोहिनी के साथ विवाह करना चाहते हैं तो उनको सौंदर्य की आवश्यकता है। सुन्दरता की आवश्यकता है तो वे भगवान् के पास जाते हैं, ''महाराज! मुझे अपना सौंदर्य दे दीजिएगा ताकि विश्वमोहिनी मेरे गले में वरमाला डाल दे। मुझे पसंद कर ले, कहीं यह न हो कि मैं reject हो जाऊँ। मुझे अपना सौंदर्य दे दीजिएगा।'' अब यह कामना दिव्य हो गई। भगवान् श्री सच मानिएगा नारद के प्रसंग से ही नहीं अन्य ऐसे प्रसंगों से भी, जहाँ आप अपनी किसी भी चीज़ को परमात्मा के साथ जोड़ देते हो वे बहुत प्रसन्न होते हैं।

व्यक्ति यदि चार घंटे–पाँच घंटे–छह घंटे इसलिए सोता है कि ताकि भजन पाठ में आलस न रहे तो यह सोना परमात्मा के साथ जुड़ गया। खाता किसलिए हूँ? इसलिए कि भूखे पेट भजन नहीं होता। मेरा भजन पाठ ठीक ढंग से हो सके तो ये भोजन करना भी परमात्मा के साथ जुड़ गया। मैं नहाता–धोता किस लिए हूँ? सुंदर किसलिए बनता हूँ? इसीलिए ताकि परमात्मा को भा जाऊँ। परमात्मा मुझे यह न कहे कि गंदा–मंदा है, कितनी बू आ रही है इससे पसीने की इसलिए मुझे नहाना–धोना पड़ता है, पाउडर इत्यादि लगाना पड़ता है। परमात्मा की उपासना के लिए बैठूँ तो उन्हें मुझ से घृणा न हो तो ये सब चीजें परमात्मा के साथ जुड़ने से दिव्य हो जाती हैं। न सोना छोड़ सकता है कोई, न खाना छोड़ सकता है कोई, न कोई नहाना–धोना छोड़ सकता है तो क्यूँ न इनको परमात्मा के साथ जोड़ दिया जाए। ये दिव्य हो जाएँगी। सब की सब, सब कुछ दिव्य हो सकता है। आप किसी भी चीज़ को दिव्य बना दीजिएगा। भगवान् के साथ जिस चीज़ का स्पर्श हो जाता है वह दिव्य हो जाती है। भगवान् की बाँसुरी दिव्य होठों के साथ लग गई, शरीर के साथ लग गई, तो दिव्य हो गई हुई थी। वह बोलती थी, वह बातचीत करती थी ऐसा शास्त्र कहता है।

थोड़े दिनों के बाद देवर्षि नारद को गुस्सा आ गया है। क्रोध आ गया है तो वह किसी और के पास नहीं गए बल्कि वे परमात्मा पर ही अपने क्रोध को बरसाने के लिए गए हैं।

''कहाँ जा रहे हो देवर्षि! बड़े व्याकुल दिखाई दे रहे हो।'' ''आप को ढूँढ रहा था।'' वाणी

बदली हुई है, क्रुद्ध वाणी बोल रहे हैं देवर्षि नारद। सौम्य कोमल बोलने वाले व्यक्ति, हर वक्त राम राम जपने वाले इस वक्त बड़े क्रुद्ध और बड़ी कठोर-कटु वाणी बोल रहे हैं। पर वह भी किसके लिए परमात्मा के लिए। मानो क्रोध आया है तो किस के ऊपर वह भी परमात्मा के ऊपर। अभी क्रोध खत्म नहीं हुआ है उनका, अभी वो श्राप देना चाहते हैं तो श्राप भी उन्होंने परमात्मा को ही दिया है। कोई व्यक्ति नहीं ढूँढा, कोई पशु नहीं ढूँढा कि उसको श्राप दिया जा सकता है। परमात्मा को क्यूँ श्राप देना? मुझे अपना गुस्सा ही तो उतारना है वह तो किसी के भी ऊपर उतारा जा सकता है। गुस्सा उतारना है तो मैं परमात्मा पर ही उतारूँगा, उन्हें ही श्राप दिया है। भगवान् श्री इन सब बातों से बहुत प्रसन्न हैं, कहा, ''देवर्षि तेरा श्राप सहर्ष शिरोधार्य करता हूँ, तू इतना अच्छा भक्त है कि तेरी हर वृत्ति मेरे साथ जुड़ी हुई है।'' देखो परमात्मा का हृदय, ''तेरी हर वृत्ति मेरे साथ जुड़ी हुई है। तुझे सुन्दरता चाहिए थी तो भी मेरे पास आए और तुझे क्रुद्ध हो के बरसना था तो भी तुम मेरे पास ही आए। तुम्हें श्राप देना था तो भी मेरे पास ही आए तेरी हर वृत्ति मेरे साथ जुड़ी हुई है।'' परमात्मा को ये बात बहुत अच्छी लगती है, कितना आसान तरीका है, सिर्फ दिशा बदलने की ज़रूरत है। एक तरफ संसार है तो एक तरफ भगवान् है बस इतना ही काम करने की आवश्यकता है।

उड़िया बाबा का नाम आप लोगों ने सुन रखा होगा। वृंदावन में उनका बहुत बड़ा आश्रम है। बड़े महान् संत हुए हैं उड़िया बाबा। आज कहीं गए हुए थे तो आज उनकी अनुपस्थिति में भी भजन कीर्तन सत्संग होता है, वह हो रहा है। लोग नाच रहे हैं, ढोलक बज रहा है, बाजा बज रहा है, चिमटा बज रहा है, झाँझें इत्यादि बज रहीं हैं और लोग मस्त हैं। आश्रम में लौटे हैं उड़िया बाबा ने आकर, ''बंद करो ये सब कुछ, कहाँ हैं भगवान्? कोई भगवान् नहीं है। कितनी देर हो गई हुई है हमें चिल्लाते-चिल्लाते। राम-राम-राम-राम-राम राम पुकारते वर्षों हो गए हैं। कहाँ है भगवान्?'' सत्संग समाप्त हो गया। उड़िया बाबा का हुक्म था सो सत्संग वहीं का वहीं रुक गया। एक मित्र आए हुए थे जो उड़िया बाबा से बात करने की हिम्मत कर सकते थे, कहा, ''बाबा! क्या बात है आज परमात्मा से लड़ाई हो गई है क्या? क्यूँ बरस रहे हो परमात्मा पर, क्या बिगाड़ा है उसने? क्या कर दिया है उसने?'' ''गया था हस्पताल रोगियों की लाईन देखी तड़प रहे थे, कराह रहे थे किसी को किसी प्रकार की पीड़ा, किसी को किसी प्रकार की पीड़ा। मेरा हृदय उन्हें देख के करुणा से द्रवित हो गया। लगा, मेरा हृदय द्रवित हो रहा है तो परमात्मा का हृदय कैसा कठोर है। वह क्यूँ देख रहा ये सब कुछ? इनको ठीक क्यूँ नहीं कर देता इत्यादि-इत्यादि? जो एक भक्त के अन्दर भावनाएँ जागतीं हैं, उस वक्त उड़िया बाबा के अन्दर इस प्रकार की भावनाएँ जगीं। वह भगवान् को गाली देने पर भी तुले हुए हैं, उन पर अपना क्रोध बरसाने पर भी तुले हुए हैं। कहाँ है वह कहाँ रहता है, तू कैसे देख सकता है इनको रोते बिलखते तड़पते हुए, क्यूँ नहीं इनके लिए कुछ करता? मानो परमात्मा पर गुस्से हो कर बाहर निकल रहे हैं। तू है ही नहीं, होता तो तेरा हृदय कम से कम एक इन्सान जितना कोमल तो होता। हर कामना को, अपनी हर चीज़ को यदि परमात्मा के साथ जोड़ दिया जाए तो क्या आपको लगता है कि वह उड़िया बाबा को क्रुद्ध देख कर स्वयं अप्रसन्न हुए होंगे। न, मुग्ध हुए होंगे, क्रुद्ध नहीं हुए मुग्ध हुए होंगे इसलिए कि इसने अपने क्रोध को भी मेरे साथ जोड़ दिया है। स्वामी जी महाराज इन्हीं कामनाओं का निर्मलीकरण कैसे किया जाता है वह समझा रहे हैं।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन 19.12.2008)

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : बटाला

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

बटाला पंजाब का पुरातन प्रसिद्ध औद्योगिक शहर है। बटाला की पावन धरती पर श्री अचलेश्वर धाम सुशोभित है। यहाँ पर भगवान् शिव ने 33 कोटि देवी देवताओं सहित पधार कर कार्तिकेय स्वामी का पूजन किया और माँ गंगा को श्री अचलेश्वर धाम के सरोवर में स्थान दिया। इसी पावन धरती पर श्री गुरु नानक देव जी का ससुराल भी है, यहाँ गुरूद्वारा श्री डेरा साहिब व गुरूद्वारा श्री कंध साहिब में बाबा नानक का विवाह पर्व प्रत्येक वर्ष बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

यूँ तो बटाला में राम नाम का प्रचार 1981 में शुरू हुआ, जब बटाला में सिर्फ दो तीन साधक दीक्षित थे। इन्होंने अपने अथक प्रयास से घर–घर जाकर लोगों में राम नाम का प्रचार किया। फिर 1988 में श्री स्वामी जी की बटाला पर असीम कृपा हुई। तब डॉ विश्वामित्र जी महाराज मनाली में साधनारत थे। वे सर्दियों में 15–20 दिन बटाला में अपनी बहन के घर प्रवास किया करते थे। तब महाराज जी स्वयं अपनी बहन जी के घर में सत्संग किया करते थे। ऐसी कृपा थी कि कुछ दिनों में ही सत्संग के लिए घर में जगह कम पड़ने लगी, तो श्री महाराज जी के कहने पर बटाला की एक संस्था 'दैनिक प्रार्थना सभा' के संचालक से संपर्क करके उनके प्रांगण में सत्संग होने लगा। तिलक होने से पहले श्री महाराज जी यहाँ पर श्री गीता पर बहुत गम्भीर प्रवचन किया करते थे। उनकी आकर्षक प्रवचन शैली से बहुत लोग प्रभावित होते थे। 1989 से 2004 श्रीरामशरणम् के बनने तक दैनिक प्रार्थना सभा के परिसर में सत्संग आयोजित होता रहा। श्री महाराज जी की आज्ञा से श्री गुरुजनों के हरेक पर्व से एक दिन पहले प्रभात फेरी का आयोजन भी होता था।

बटाला श्रीरामशरणम् की स्थापना से पहले ही बटाला के साधकों को पूज्य श्री विश्वामित्र महाराज जी का निश्छल स्नेह व प्यार मिलता रहा है। पहले पहल बटाला में साधकों की संख्या कम थी, साधकों को साप्ताहिक–सत्संग में सम्मिलित होने के लिए नज़दीकी शहर जालन्धर के श्रीरामशरणम् में जाना पड़ता था। समय बीतने के साथ व श्री स्वामी जी महाराज की कृपा से साधकों की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी होती रही। श्रीगुरुजनों की अहेतुकी कृपा से बटाला में साप्ताहिक–सत्संग और

दैनिक सत्संग के साथ–साथ अखण्ड–जाप का भी समय–समय पर आयोजन होता रहा। यहाँ पर तीन रात्रि के साधना–सत्सगों का भी आयोजन हुआ है।

श्री स्वामी जी महाराज की कृपा व श्री महाराज जी के तेज व प्रभाव से साधकों की लगातार वृद्धि होने के कारण दैनिक प्रार्थना सभा का बड़ा परिसर भी कम पड़ने लगा व सत्संग के लिए अपनी खुद की जगह न होने पर वरिष्ठ साधकों द्वारा बटाला में श्रीरामशरणम् बनाने के लिए श्री महाराज जी से आग्रह किया गया। तत्पश्चात् प्रभु श्री राम जी की कृपा से एवं गुरुजनों के शुभ आशीर्वाद व पूजनीय महाराज जी की आज्ञा से बटाला श्रीरामशरणम् के लिए भूमि खरीदी गई और श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। श्री महाराज जी की आज्ञा से श्रीरामशरणम् की नींव का कार्य दैनिक प्रार्थना सभा के संचालक द्वारा सम्पन्न हुआ।

9 दिसम्बर 2004 को श्री विश्वामित्र महाराज जी के तिलक–दिवस वाले दिन बटाला के श्रीरामशरणम् का श्री महाराज जी द्वारा विधिवत् शुभ उद्घाटन किया गया। फिर बटाला के सभी साधकों ने श्रीरामशरणम् श्री स्वामी जी महाराज को अर्पित किया। उद्घाटन के समय करीब 7500 – 8000 साधक उपस्थिति थे। 350 साधकों ने उस पावन अवसर पर पूज्य श्री महाराज जी से दीक्षा प्राप्त की। पूज्य महाराज जी ने ईमानदारी पर प्रवचन दिए और फिर उन्होंने धुन लगायी ''मंगल नाम राम राम''। पूरा वातावरण राममय हो गया था। हर ओर सिर्फ राम नाम की गूँज थी। तब से लेकर अब तक श्री स्वामी जी महाराज की असीम कृपा से सत्संग चल रहा है और समय समय पर विशेष सत्संगों का आयोजन होता है।

बटाला श्रीरामशरणम् करीब 1800 गज़ में बना हुआ है। इसमें एक मुख्य सत्संग हॉल है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर एक जाप कक्ष, पूज्य श्री महाराज जी का कमरा, एक ग्रन्थ कक्ष और एक ऑफिस है। यह सब करीब 700 गज़ पर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त 700 गज़ शेड से ढका हुआ है और बाकी क्षेत्र पर लॉन बनाया गया है।

2003–04 में जब बटाला श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य चल रहा था, तब कुछ साधक नित्य सुबह निर्माण स्थल पर श्री अमृतवाणी जी का पाठ करते थे। जब इस बात की जानकारी पूज्य श्री महाराज को हुई तो श्री महाराज जी बहुत प्रसन्न हुए, उन्होंनें उन साधकों के लिए शाबाशी पत्र भेजा और फरमाया कि निर्माण स्थल पर नित्य प्रति दिन पाठ करने से सभी विघ्न बाधाएँ दूर होंगी और निर्माण कार्य शीघ्रता से पूर्ण होगा।

यहाँ प्रातः प्रतिदिन 7 बजे से 8 बजे तक दैनिक सत्संग होता है। रविवार को गर्मियों में प्रातः 7:30 बजे से 9:00 बजे तथा सर्दियों में प्रातः 8:00 बजे से 9:30 बजे तक श्री अमृतवाणी संकीर्तन, ग्रन्थ पाठ, भजन तथा प्रवचन होते हैं। व्यास पूर्णिमा पर और गुरुजनों के अवतरण दिवस पर भारी संख्या में साधक सम्मिलित होते हैं। इसके अलावा 2 तारीख, 13 तारीख, 29 तारीख तथा पूर्णिमा के दिन का अखण्ड जाप कार्यक्रम होता है।

श्री गुरुजनों के आशीर्वाद तथा राम जी की कृपा से सारे कार्यक्रम सुचारु रूप से चल रहे हैं। हम सब साधकों की यही प्रार्थना है कि श्रीरामशरणम् बटाला पर गुरुजनों का असीम स्नेह और कृपा इसी तरह बरसती रहे, खूब राम नाम का प्रचार हो और स्वामी जी महाराज का परिवार यूँ ही बढ़ता रहे।

''कृपा ही कृपा बरस रही
मेरे बाबा के दरबार में''।

कृपा का साकार रूप

आज से चौरासी वर्ष पूर्व 1940 में हरियाणा के गुरुकुल मटिंडु में ब्रह्मलीन श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज से राम–नाम महामंत्र को ग्रहण करके मेरे पिताजी ने दीक्षा ली। वे स्वामी जी के विशेष आशीर्वाद और स्नेह–पात्र शिष्य बने। पिताजी का कृषि सम्बन्धी यंत्रों का कारखाना था जिसका कवि के भावुक मन से कुछ लेना–देना न था।

स्वामी जी की प्रेरणा और कृपा से भावों में भक्ति–गंगा बहने लगी। पुस्तकें लिखना व्यवसाय नहीं था पर भावों के अतिरेक से लेखनी चलने लगी। भजन कागज़ पर उतरने लगे। 1953 में कुछ एकत्र हुए भजन स्वामी जी महाराज को दिखाये। उन्हें बहुत पसन्द आये। मुक्त–कंठ से प्रशंसा की और अपने लिखे कुछ भजन दिये और साथ में छपवाने का आदेश दिया।

यह भजन 1953 में 'भजन–पुष्पांजलि' के रूप में साथ–साथ छपे। दो वर्षों में तीन बार प्रकाशित हुए और विख्यात हुए। उसके बाद अलग से 'भजन–माधुरी' के रूप में यह यात्रा अन्तिम साँस तक चली। तीन सौ के करीब भजनों की रचना हुई। हिज़ मास्टर्स वॉइस् HMV ने रिकार्ड बनाये। आकाश–वाणी में प्रसारित होने लगे। हिज़ मास्टर्स ने अपने पचास वर्षों के सबसे लोकप्रिय भजनों में दो भजन शामिल किये। इससे बड़ी बात देश–विदेश के गायकों में ही नहीं हमारे प्यारे भक्त भाई और बहनों में भी ये लोकप्रिय हैं।

यह स्वामी जी महाराज का आशीर्वाद और कृपा थी कि वाणी पर सरस्वती देवी बैठ गईं और मन में राम नाम की अलौकिक गूँज।

पूज्य स्वामी जी महाराज की कृपा का प्रभाव पिताजी पर ही नहीं हम सबके जीवन में भी दिखाई देने लगा। हमारे गांव में अखंड जाप और सत्संग शुरू हो गए। सबसे अच्छी बात यह थी कि कोई भी व्यक्ति अपने घर पर इनका आयोजन कर सकता था।

सबका उत्साह देखते ही बनता था। स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का अनुशासन, स्वच्छता और भक्ति भाव उन सब भक्तों के भीतर बस गया था। मेरी उम्र के बच्चों की 'ड्यूटी' घर–घर जाकर जाप की बारी के नाम लिखने की होती थी। दिन में महिलाएँ और रात को पुरुष और घर की महिलाएँ बड़े भाव, चाव और श्रद्धा से कार्यक्रम में भाग लेते थे और चौबीस घण्टे का जाप करते थे।

महिलाओं और बच्चों में गाने का उत्साह बढ़ा। गाँव की औरतों का एक भजन सत्संग में अवश्य होता था। इससे उनका आत्म–सम्मान बढ़ा। वे घर से बाहर आने लगीं। बच्चों का स्कूल सब सत्संगियों के सहयोग से बना। सबने गाँव की पंचायती ज़मीन को साफ कर हॉल बनाया और सात क्लास तक का स्कूल शुरू हुआ।

बच्चे पढ़ने लगे और एक बहुत ही प्यारा वातावरण बना। अभी तक सिर्फ लड़के ही दूर पढ़ने जाते थे पर स्वामी जी महाराज की कृपा, आशीर्वाद से पिताजी जैसे साधकों के पुरुषार्थ से जो लड़कियाँ और छोटे लड़के दूर न जा पाते थे इस स्कूल में शिक्षा पाने लगे। राम कृपा भरपूर बरस रही थी हम सबके ऊपर।

जब मैंने अतीत में झांका तो जाने कितनी अनुभूति, कितनी कृपा स्वामी जी महाराज की रही हम सब पर। मुझे तीनों महाराज की असीम कृपा मिली। मैं स्वयं को बड़भागी मानती हूँ ऐसे सन्तों का दरबार मिला। ■

Chitrakoot Sunderkand Satsang: A Divine Experience

Recently, in April 2026, a special 3 day, Sunderkand Satsang was held in Chitrakoot wherein Shree Sunderkand ji was recited 21 times. With the grace of Shri Ram, I was able to listen to the continuous recitation of Sunderkand for all the 21 times. This journey, though simple on the outside, has been deeply transformative within. When I began, it was with a basic intention—to complete the paath with discipline. But as the days passed, it slowly shifted from a task to a connection. Each time I listened, something new opened up. The same verses started carrying different meanings, touching different parts of the mind and heart. Sunderkand is a reminder of faith, courage, and complete surrender. Through Hanuman ji's journey, I found reflections of my own life—moments of doubt, but also the strength that comes when we remember Ram. There were times when the mind was distracted and times when it was fully absorbed—but over time, I noticed a certain calmness settling in. There is more patience, a little more trust and a growing habit of remembering Ram naam in between daily activities. This experience has reinforced the inner connection with Ram Naam for me. The power truly lies in consistent remembrance. I feel utterly grateful that with Gurujan's kripa, I was able to attend this Satsang, stay with this sankalp and complete it. More than completion, it feels like a beginning—a step towards deeper shraddha and samarpan. I pray that this remembrance continues and strengthens and that Ram naam stays constant in my life. ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(मार्च से जून 2026)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **फाज़लपुर**, कपूरथला, पंजाब में 21 से 22 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 102 साधक सम्मिलित हुए और 5 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नरोट मेहरा**, पंजाब में 26 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 260 साधक सम्मिलित हुए और 51 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सिरसा**, हरियाणा में 28 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 76 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 29 मार्च से 3 अप्रैल तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा। 29 मार्च को 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार**, हरियाणा में 4 से 5 अप्रैल तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 16 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चित्रकूट धाम**, मध्य प्रदेश में 11 से 14 अप्रैल तक बाल्मीकीय रामायणसार से श्री सुन्दरकाण्ड

की 21 आवृत्तियों का पाठ हुआ। 14 अप्रैल को 96 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 582 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। लगभग 3500 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **भरेड़ी**, हिमाचल प्रदेश में 19 अप्रैल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 60 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मंडी**, हिमाचल प्रदेश में 26 अप्रैल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 28 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पीथमपुरा**, जिला धार, मध्य प्रदेश में 28 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 311 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जंडियाला गुरु**, पंजाब में 3 मई को खुला सत्संग लगा जिसमें 258 साधक सम्मिलित हुए और 23 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शनाग**, हिमाचल प्रदेश में 4 से 5 मई तक खुला सत्संग लगा।
- **कंडाघाट**, हिमाचल प्रदेश में 10 मई को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 200 साधक सम्मिलित हुए और 20 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में मार्च से मई तक साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् 115 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **काठमांडू**, नेपाल में 21 से 23 मई तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चम्बी (नगरी)**, हिमाचल प्रदेश में 24 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 39 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। लगभग 800 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **अशोक नगर**, मध्य प्रदेश में 24 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 281 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। लगभग 1000 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 35 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **तारागढ़**, पंजाब में 1 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। 400 से अधिक व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 32 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **किश्तवाड़**, जम्मू व कश्मीर में 20 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन होगा जिसके पश्चात् नाम दीक्षा होगी।
- **भद्रवाह**, जम्मू व कश्मीर में 21 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन होगा जिसके पश्चात् नाम दीक्षा होगी।
- **लोट**, हिमाचल प्रदेश में 23 से 24 जून तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 24 जून को नाम दीक्षा होगी।
- **बंगा**, पंजाब में 28 जून को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूज्य डॉ. विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग होगा।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **गुना**, मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है।
- **आगरा**, उत्तर प्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है।
- **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में खुले सत्संगों में लगभग 200 श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए चार हॉलनुमा कमरों का निर्माण हो गया है। अब बाथरूम ब्लॉक का कार्य तेजी से चल रहा है और खुले सत्संग से पहले निर्माण कार्य पूर्ण हो जाने की पूरी सम्भावना है।
- **मंडीदीप**, मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् के लिए भूमि खरीद ली गई है और नक्शा तैयार हो रहा है। ■

Sadhna Satsang (July to December 2026)

Haridwar	30 June to 3 July	Tuesday to Friday
Haridwar	24 to 29 July	Friday to Wednesday
Haridwar	30 September to 3 October	Wednesday to Saturday
Haridwar (Ramayani)	11 to 20 October	Sunday to Next Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Wednesday to Saturday
Kapurthala (Fazalpur)	20 to 23 November	Friday to Monday

Open Satsang (July to December 2026)

Rohtak	15 to 16 August	Saturday to Sunday
Rewari	5 to 6 September	Saturday to Sunday
Jalandhar	13 September	Sunday
Hiranagar	15 September	Tuesday
Jammu	18 to 20 September	Friday to Sunday
Gurdaspur	25 to 27 September	Friday to Sunday
Hoshiarpur	4 October	Sunday
Saylorsburg (USA)	8 October to 11 October	Thursday to Sunday
Sujanpur	23 to 25 October	Friday to Sunday
Pathankot	31 October to 1 November	Saturday to Sunday
Kathua	7 November	Saturday
Amritsar	15 November	Sunday
Melbourne (Australia)	27 to 29 November	Friday to Sunday
Jawali	29 November to 1 December	Sunday to Tuesday
Alampur	3 to 4 December	Thursday to Friday
Gwalior	5 to 6 December	Saturday to Sunday
Surat	19 to 20 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	26 to 27 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Other Centers (July to December 2026)

Ludhiana	30 August	Sunday
Obaidullaganj	7 September	Monday
Jalandhar	13 September	Sunday
Hiranagar	15 September	Tuesday
Jammu	20 September	Sunday
Gurdaspur	27 September	Sunday
Hoshiarpur	4 October	Sunday
Saylorsburg (USA)	8 October	Thursday
Saylorsburg (USA)	11 October	Sunday
Sujanpur	25 October	Sunday
Pathankot	1 November	Sunday
Kathua	7 November	Saturday
Amritsar	15 November	Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	22 November	Sunday
Alampur	4 December	Friday
Gwalior	6 December	Sunday
Bhopal	13 December	Sunday
Surat	20 December	Sunday
Bhiwani	26 December	Saturday

Purnima (July to December 2026)

July	29	Wednesday
August	28	Friday
September	26	Saturday
October	26	Monday
November	24	Tuesday
December	23	Wednesday

Naam Diksha in Shree Ramsharanam Delhi (July to December 2026)

July	29	Wednesday 4.00 PM
August	23	Sunday 10.30 AM
October	11	Sunday 10.30 AM
November	8	Sunday 11.00 AM
December	13	Sunday 11.00 AM

Cards made by children from different centers

Colouring Activity

Take your time to colour each bead of the mala while doing RAM Jaap in your mind.

प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदे और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय–समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924